ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

न त्वावाँ असि देवता विदानः। ऋग्वेद 1/165/9
हे प्रभो ! आपके तुल्य न कोई पूज्य है न कोई विद्वान है।
O Lord ! there is none who is more adorable than You nor is anyone more learned than You.

वर्ष 39, अंक 28 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 16 मई, 2016 से रविवार 22 मई, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्यसमाज डीसीएम रेलवे कॉलोनी के पुनर्निर्मित भवन का उद्घाटन सम्पन्न

मन्दिर का पुनर्निर्माण आर्यों की संगठन शक्ति का प्रतीक

आर्य समाज के भवन को और अधिक भव्य बनाने में हर प्रकार का सहयोग देंगे –रविन्द्र गुप्ता, पूर्व महापौर

निर्माण का प्रथम चरण यज्ञशाला एवं सत्संग हॉल पूरा : सम्पूर्ण भवन निर्माण के लिए सहयोग की अपील

आर्य समाज डीसीएम रेलवे कॉलोनी का पुनर्निर्मित भवन। ध्वस्त आर्य समाज का मलबा एवं कारसेवा करते सभा मन्त्री श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्यसमाज डी.सी.एम. रेलवे कालोनी दिल्ली के पुनर्निर्मित भवन का उद्घाटन समारोह रविवार 15 मई, 2016 को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

ज्ञातव्य है कि गत वर्ष 16 मई, 2015 को आर्य समाज मंदिर डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी को सरकार द्वारा गिरा दिया गया था। सभा को सूचना मिलते ही तुरंत कार्रवाई करते हुए इस आर्य समाज मंदिर को पुनः स्थापित करने की मांग को लेकर धरना-प्रदर्शन किया गया था। जिस पर एम.सी.डी., रेलवे एवं सरकार द्वारा आर्य समाज को इसी स्थान पर पुनः स्थापित करने के आश्वासन दिये गए। सभा के प्रयास एवं आर्यजनों के सार्थक सहयोग से एक वर्ष के अन्दर ही यह आर्य समाज मंदिर पुनः बनकर तैयार हो गया और आज इसका उद्घाटन किया जा रहा है।

नवनिर्मित भवन का उद्घाटन महाशय धर्मपाल जी (चेयरमैन, एमडीएच मसाले) के करकमलों से नारियल फोड़कर एवं रिबन काटकर किया गया।

उद्घाटन समारोह के अवसर पर सम्बोधित करते हुए पूर्व महापौर श्री रविन्द्र गुप्ता ने कहा कि 'संगठन शक्ति से ही लोकोपकारी कार्यों में सफलता पाई जा सकती है। वैदिक धर्म प्रचार के साथ सामाजिक जागृति में आर्यजनों का अतुलनीय योगदान रहा है।' उन्होंने आगे कहा कि हम दिल्ली नगर निगम की ओर से और सदर पहाड़गंज जॉन की ओर से हर संभव

...शेष पेज 5 पर

सम्पादकीय

आखिर कितनी संगीताओं के लिए कुएँ खोदने पड़ेंगे?

युगधर्म पुस्तक में सन् 1942 का एक किस्सा दर्ज पाया कि सदर बाजार के बारहटूटी चौक पर एक कुआँ था। यह कुआँ कमेटी ने बनवाया था। बिना वर्ण व्यवस्था के इस कुएँ पर सबका अधिकार था, यदि कोई गरीब, दलित वहां पानी लेने जाता तो उसे यह कह कर भगा दिया जाता कि यह कुआँ हिन्दुओं और मुस्लिमों का है। दलितों का इस पर कोई हक नहीं। गजब यह था कि यह बात कुएँ पर खड़े होकर हिन्दू कहते थे। मसलन एक मुस्लिम जाति से ''सक्का''(विशेष जाति) अपना चमड़े का डोल लटकाकर पानी भर सकता था किन्तु एक दलित महिला या पुरुष अपनी धुली साफ बाल्टी नहीं भर सकती थी और हाँ इसमें कमाल यह था कि जो दलित मुस्लिम बन जाता था वो कुएँ पर पानी भर सकता था; मसलन यदि कोई दलित हिन्दू है तो वह पानी नहीं भर सकता था। व्यवस्था आज भी ज्यों कि त्यों खड़ी है। आज बापुराव का ईश्वर पर विश्वास था। कुआँ खोद लिया। यदि कोई अन्य होता तो सोचो क्या करता? अब इस जातिगत व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न उठाते समय सोचना होगा कि हमारे सर्वनाश का कारण कौन, धर्म या जातिवाद?

''आत्मवत् सर्वभूतेषु'' सभी प्राणियों को अपनी आत्मा जैसा ही मानो। शायद यह उपदेश उस समय किताबों में सिमट जाते हैं जब महाराष्ट्र में दलित संगीता को ऊँची जात वाले द्वारा छुआछूत के कारण अपने कुएँ से पानी नहीं भरने दिया जाता। बिहार के दशरथ मांझी या उनके अकेले पहाड़ काटकर रास्ता बना देने की कहानी सबने सुनी होगी। ऐसी ही एक और कहानी सुर्खियों में है। सूखा पीड़ित महाराष्ट्र की धरती का सीना चीरकर महज 40 दिनों में पानी निकाल देने वाले बापुराव ताजणे की भी दसरथ से कम नहीं है। बापुराव ताजणे महाराष्ट्र स्थित वाशिम जिले के कलांबेश्वर गांव में मजदूरी कर अपना व परिवार का पेट पालते हैं। दलित होने के कारण बापुराव की पत्नी को ऊंची जाति के पड़ोसियों ने जब अपने कुएं से पानी नहीं लेने दिया तो बापुराव ताजणे को बेहद तकलीफ हुई। दिल ही दिल में यह बात उन्हें चुभने लगी। उस रात उन्हें नींद नहीं आई। मानो दिल में कोई टीस चुभ रही थी। सुबह-सवेरे उठकर वह बाहर निकले और खुद ही कुआं खोदना शुरू कर दिया। अचानक यह सब देख सभी सकते में पड़ गए। पड़ोसी ही नहीं, परिजन भी उनका मजाक उड़ाने लगे। लोगों को उनका यह जुनून पागलपन सा लगा। सही भी था, इतने पथरीले इलाके में भला कुआं खोदकर पानी निकालने की बात पर किसे यकीन होगा! वह भी तब जब उस इलाके में पहले से ही आसपास के तीन कुएं और एक बोरवेल सूख चुके हों। लेकिन कहते हैं मनोरथ सच्चा हो तो ईश्वर जरूर साथ देता है। बापुराव रोजाना 8 घंटे की मजदूरी के बाद करीब 6 घंटे का समय कुआं खोदने के लिए देते। महज 40 दिनों में बापुराव ने बगैर किसी की मदद के अकेले ही कुआं खोदकर पानी निकाल दिया।

जातिवाद के कारण एक हजार साल की गुलामी झेल चुके भारतीय अभी भी कई जगह एक दूसरे की साँस लेने और छूने से मैले हुए जा रहे हैं! आज बापुराव ने जो किया उसकी ऊंची सोच और बड़प्पन को हर कोई नमन कर रहा है। लेकिन बापुराव की पत्नी के साथ जो हुआ यह बरताव दलित समुदाय के सदस्य के रूप में उसकी बुनियादी गरिमा से वंचित करता है, बापुराव ने तो अपनी पत्नी संगीता के लिए कुआँ खोदकर समाज को अक्स दिखा दिया किन्तु इसी समाज और देश में न जाने कितनी अभागी संगीताएं हैं और उनके लाचार पति बापुराव, जो आज भी इस सामाजिक छुआछूत को बिना विरोध किये अपना भाग्य मान बैठे! रोज भेदभाव के हाशिए पर जीवन जीने को बाध्य होते हैं ; बच्चों को स्कूलों में दोपहर का भोजन उनकी जाति का पता करके दिया जाता है। कुछ दिनों पहले की ही घटना है। मध्य प्रदेश के दमोह जिले के खमरिया कलां गांव में जात-पात के भेद ने ही एक मासूम की बलि ले ली थी। यहां गांव के प्राथमिक स्कूल में पढ़ने वाले कक्षा तीसरी के छात्र को स्कूल के हैंडपंप पर पानी पीने से रोका गया इस पर वो मासूम अपनी बोतल लेकर कुएं से पानी निकालने पहुंचा और जिन्दगी से हाथ धो बैठा। हम किसी राज्य विशेष को चिह्नित नहीं कर रहे हैं बल्कि पूरे देश की व्यवस्था पर प्रश्न खड़ा कर रहे हैं कि इक्कीसवीं सदी में जबकि भारत विश्वशक्ति बनने का इरादा रख रहा है, क्या, वह इन मानसिक बीमारियों से मुक्त होकर आगे बढ़ने का भी इरादा रखता है? क्या एक हजार साल की गुलामी झेल चुके भारतीय अभी भी उस गुलामी के अंधेरे में ही जीना पसन्द कर रहे हैं। आखिर क्यों नहीं वे इस पुरानी छुआछूत की बीमारी से दूर होना चाहते। कमी कहां है इसे ढूंढ कर इस कोढ़रूपी बीमारी को समूल नष्ट करना ही होगा।

-सम्पादक

स्वाध्याय

प्रभो! हमारे साथी बनो

त्वां जना मम सत्येष्विन्द्र सन्तस्थाना वि ह्वयन्ते समीके। अत्रा युजं कृणुते यो हविष्मान् ना सुन्वता सख्यं वष्टि शूरः।। -ऋ. 10/42/4; अथर्व. 20/89/4
ऋषिः-कृष्णाः।। देवता-इन्द्र।। छन्दः-पादनिचृत्त्रिष्टुप्।।

विनय- हे परमेश्वर! केवल राजनैतिक क्षेत्र में ही नहीं अपितु साहित्यिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों में मनुष्य दो पक्षों में विभक्त हुए परस्पर संघर्ष कर रहे हैं और मज़ेदार बात यह है कि इन कलहों, युद्धों में दोनों पक्षवाले तुम्हारे पवित्र नाम की दुहाई दे रहे हैं। प्रत्येक कहता है कि ''हमारा पक्ष सच्चा है, अतः परमेश्वर हमारे साथ है, विजय हमारी निश्चित है।' परन्तु हे मनुष्यो! सत्य के साथ ऐसा खिलवाड़ मत करो! तनिक अपने अन्दर घुसकर, अन्तर्मुख होकर, अपनी सच्ची अवस्था को देखों। 'सत्य', 'परमेश्वर' आदि परम पवित्र शब्दों का यूं ही हलके पन से उच्चारण करना ठीक नहीं है। यह पाप है। गहराई में घुसकर, गहरे पानी में पैठकर, सत्य वस्तु को तत्परता के साथ खोजो और देखो कि वह सत्य स्वरूप इन्द्र सच्चे (वास्तविक) सत्य का ही सहायक है। इस संसार मे जो लोग हाथ में ''हविः'' लिये खड़े हैं, आत्म-बलिदान चढ़ाने को उद्यत हैं, अपना सिर हथेली पर रखे फिरते हैं, उन त्यागी पुरुषों को ही वे परमेश्वर अपना साथी बनाते हैं, उन्हीं के वे सहायक होते हैं, क्योंकि यह ही सच्चे होने की सच्ची पहचान है। जिसको वास्तव में सत्य से प्रेम है वह तो उस सत्य के लिए सिर पर कफ़न बांध लेता है। सत्य का सच्चा पुजारी तो भंगुर शरीर की क्या, संसार भर की अन्य सब असत्य, असार वस्तुओं की बलि चढ़ाकर भी सत्य की रक्षा करता है, अतः उसे ही उस शूर, महापराक्रमी, सर्वशक्तिमान् इन्द्र की मित्रता (सख्य) और सहायता प्राप्त होती है। यदि उस शूर की मित्रता चाहते हो तो 'हविष्मान' और सवन करने वाले बनो। जो 'असुन्वत्' है जो यज्ञ के लिए उद्योग करता हुआ सोम का सवन नहीं करता-कठोर परिश्रम करता हुआ सार वस्तु का, सत्य का, तत्त्व का निष्पादन नहीं करता-ऐसे पुरुष के साथ वे इन्द्र कभी मित्रता नहीं करना चाहते, अतः हे भाइयो! ढोंग करना छोड़ दो, बिना जाने और बिना तह में घुसे यूं ही 'सत्य', 'परमेश्वर' आदि नामों का पुकारना छोड़ दो! सत्य कभी छिपेगा नहीं। जब तुममे सचाई होगी तो उसके लिए सब-कुछ त्याग करने को अवश्य तैयार होंगे और तुममें आगे-आगे सत्य-रस को, तत्त्व=सार को निकाल प्राप्त करने की उत्कट लगन भी होगी और तब तुम देखोगे कि तुम्हें वह परम सौभाग्य प्राप्त है कि तुम शूर सर्वशक्तिमान् इन्द्र की मित्रता में हो, उसके 'युज्'= साथी बने हुए हो।

शब्दार्थ-इन्द्र=हे परमेश्वर! मम सत्येषु='मेरा पक्ष सच्चा है, मेरा पक्ष सच्चा है' ऐसे अपने झगड़ों में, स्पर्द्धाओं में जनाः=मनुष्य त्वाम्=तुझे वि ह्वयन्ते=विविध प्रकार से पुकारते हैं। एवं समीके=युद्ध में,संग्राम में संतस्थानाः= स्थित हुए, अड़े हुए मनुष्य भी तुझे अपने-अपने पक्ष में पुकारते हैं, परन्तु अत्र= इस संसार में, हे मनुष्यो! यो हविष्मान्= जो मनुष्य बलिदान के लिए तैयार है उसे ही वह इन्द्र युजं कृणुते=अपना साथी बनाता है, शूरः=वह इन्द्र असुन्वता=यज्ञ के लिए सवन न करने वाले अनुद्यमी पुरुष के साथ सख्यं न वष्टि= कभी मित्रता नहीं चाहता।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

क्या सैनिक सिर्फ मरने के लिए होते हैं?

एक बार फिर कश्मीर राजनीति का अखाड़ा बनता जा रहा है। फिर से तमाम तथाकथित धर्मनिरपेक्ष दल राजनीति की भट्टी में कश्मीर का भविष्य झोंकते से नजर आ रहे हैं। इस बार मामला विस्थापित कश्मीरी पंडितों का नहीं, बल्कि कश्मीर को बाढ़, बीमारी, आतंक भूख आदि से बचाने वाली सेना के रिटायर जवानों के मकानों को लेकर है। पीडीपी, नेशनल कॉन्फ्रेंस ने साफ किया है कि यदि घाटी में पूर्व सैनिकों को बसाया गया तो देश बड़े विरोध प्रदर्शन को तैयार रहे। उमर अब्दुल्ला और कांग्रेस ने कहा कि सैनिक कॉलोनी बनाने के सरकार के प्रस्ताव का सीधा मतलब धोखे से बाहरी लोगों को कश्मीर में बसाने की चाल है और धारा 370 को नजरअंदाज करना है तो वहीं अलगाववादियों ने विरोध का ऐलान किया। अलगाववादी नेताओं ने भी घाटी में रिटायर्ड जवानों के लिए अलग (सैनिक) कॉलोनी बनाने को, कश्मीर में बाहरी लोगों को बसाने की चाल और मुस्लिम बहुल राज्य के सामाजिक ढांचे में बदलाव बताया है। यदि विपक्ष की बात करें तो जब बात कश्मीर की रक्षा की होती है तो सैनिक अन्दर के हो जाते हैं। किन्तु जब उनके वहां रहने आवास आदि की बात आती है तो सैनिक बाहर के लोग हो जाते हैं। शायद इसी कारण पिछले कुछ सालों से सेना कश्मीर के अन्दर लगातार सम्मान और मकान के लिए तरस रही है। एक ऐतिहासिक भूल धारा 370 को विपक्ष आज भी अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाये खड़ा है। किन्तु यह प्रतिष्ठा का प्रश्न क्या सिर्फ गैर मुस्लिम लोगों के लिए है? क्योंकि श्रीनगर के अन्दर तिब्बत से आकर बड़ी संख्या में तिब्बती मुस्लिम तो बस सकते हैं; लेकिन जब बात अन्य समुदाय की आती है, तब धारा 370 को हथियार की तरह इस्तेमाल किया जाता है। श्रीनगर के बीचोबीच बाहरी मुस्लिम बस सकते हैं किन्तु जब सेना के जवानों को बसाने का जिक्र करते हैं तो सामाजिक धार्मिक ढांचा बिगड़ने की बात दोहराई जाती है। जो राजनेता या दल एक स्वर में आज मात्र कुछ सैनिकों के वहां बस जाने से कश्मीर का सामाजिक, धार्मिक ढांचा बिगड़ने की बात कर रहे हैं वे तब कहाँ थे जब तीन दिन के अन्दर मजहबी जुनून में पागल हुए एक वर्ग के कारण साढ़े तीन लाख कश्मीरी पंडितों को घाटी से भागना पड़ा था? क्या तब सामाजिक धार्मिक ढांचा, बिगड़ने की बजाय सोहार्दपूर्ण हुआ था?

हमेशा से जम्मू कश्मीर, आसाम, और बंगाल पर राजनैतिक दलों के नजरिये में कहीं न कहीं दोहरापन दिखा देता है। कश्मीर में पंडितों को बसाने की बात पर बिफरने वाली ममता बनर्जी ने पिछले दिनों साफ तौर पर धमकी देते हुए कहा था यदि एक भी बांग्लादेशी को बाहर निकाला गया तो देखना हम क्या करेंगे! हर मुद्दे को वोट के आधार पर देखने वाले राजनितिक दल आखिर कब देश के जवानों का दर्द समझेंगे? वर्ष 1988 से अब तक कश्मीर में 6,193 जवान शहीद होने के अलावा न जाने कितने जवान अपने अंग गवां चुके हैं लेकिन राजनेता हमेशा उनके बलिदान को सिर्फ एक कानून की धारा 370 में लपेट कर शासन करते नजर आ रहे हैं। सब जानते हैं कि अलगाववादियों को घाटी में जवानों का बसना कतई रास नहीं आएगा पर देश के अन्य विपक्षी दलों को जवानों के वहां बसने से क्या आपत्ति है? यदि आपत्ति है तो फिर अलगाववादियों और इन दलों में अंतर क्या है?

आज भारत की सुरक्षा की दृष्टि से हिमालयी क्षेत्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। लेकिन दुर्भाग्य से यह क्षेत्र विकास की दृष्टि से भी और सुरक्षा की दृष्टि से भी उपेक्षित रहा है। पाकिस्तान के अनाधिकृत कब्जे में जम्मू-कश्मीर का लगभग 10 हजार वर्ग कि.मी. भाग है। आज यह क्षेत्र पूर्णतया मुस्लिम हो चुका है। ऊपर से चीन तिब्बत में अपने पूर्व सैनिकों को बड़ी संख्या में बसा कर आज पाक अधिकृत कश्मीर में भी अपने सैनिक अड्डे बनाने की पुरजोर कोशिश कर रहा है। उसे देखते हुए आज समय की मांग है कि भारत ज्यादा से ज्यादा संख्या में सैनिकों व पूर्व सैनिकों को अंदरूनी-बाहरी के मुद्दे से हटकर कश्मीर में बसा दे।

आज कश्मीर में विकास की काफी सम्भावना है। पर्यटन के अलावा कश्मीरी कपड़ों का भी बड़ी संख्या में कारोबार होना वहां के लोगों को मुख्यधारा में जुड़कर आज अपना, अपने आने वाली नस्ल का भविष्य सोचना होगा। अनंतनाग के युवा अतहर आमिर उल शफी आई ए एस में चुने जाने को लेकर काफी खुश है। आमिर कहता है कि कश्मीर को सबसे पहले गीलानी जैसे कट्टरपंथियों के चंगुल से लोगों को आज़ाद कराना होगा। मैं चाहता हूँ कि वह माहौल बने जिसमें जनमत संग्रह में हिन्दुस्तान को बहुमत मिले और हम सर उठा के संतोष के साथ कह सकें कि हम एक सेक्यूलर देश हैं और कश्मीर हमारा बेहद अजीज़ हिस्सा है और यह सुनकर कश्मीरी मुस्कुरा कर सहमति देते हुए कहें कि कश्मीर हमारा है, हम भारत मां के सपूत हैं।

संयुक्त राष्ट्र में आर्य समाजी

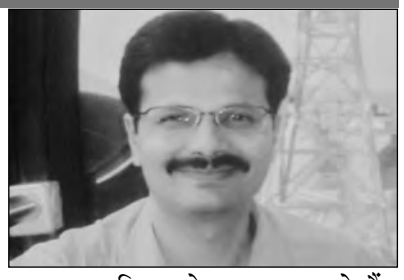

उत्तर प्रदेश के बागपत जिले में जन्मे सूर्यदेव उज्ज्वल अब संयुक्त राष्ट्र के सलाहकार नियुक्त हो गये हैं। निश्चित ही यह खबर देश के साथ आर्य समाज का भी गौरव बढ़ाने वाली है। मवीकलां गाँव में पिता डॉ सुरेन्द्रपाल आर्य और माता सत्यवती आर्य के पुत्र सूर्यदेव उज्जवल महर्षि दयानन्द सरस्वती को अपना आदर्श मानने के साथ वैदिक संस्कृति से खासा लगाव रखते हैं। आर्य परिवार में जन्मे डॉ उज्ज्वल यूएनओ की मानव अधिकार परिषद में सबसे कम उम्र के सलाहकार हैं। उनके पिता डॉ. सुरेन्द्रपाल आर्य बताते हैं कि वह हवन में प्रयुक्त होने वाली लकड़ियों और हवन सामग्री को हमेशा अपने साथ रखते हैं।

1973 में जन्मे डॉ. उज्जवल एक साधारण परिवार से ताल्लुक रखते हैं। डॉ उज्ज्वल ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राथमिक विद्यालय अपने गाँव मवीकलां से और माध्यमिक जनता वैदिक इंटर कालेज बड़ौत से पूर्ण की। इसके बाद दिल्ली विश्वविद्यालय से एलएलएम् और आस्ट्रेलिया से पीएचडी की। कई वर्षो तक सीपी विश्वविद्यालय हांगकांग में चीफ प्राक्टर के पद पर कार्यरत रहे। उनकी पत्नी स्वाति आर्य भी हांगकांग के विवि में क़ानूनी प्रवक्ता है। **-राजीव**

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30=8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

'अविद्यायुक्त असत्य धार्मिक मान्यताओं का खण्डन और आर्यसमाज'

स्वामी दयानन्द जी ने ईश्वर प्रदत्त अधिकार का उपयोग किया, लोगों को असत्य से दूर किया व सत्य को प्राप्त कराया, इस कारण सारी मनुष्य जाति उनकी ऋणी है। ईश्वर सर्वशक्तिमान है। महर्षि दयानन्द ने खण्डन का कार्य अपने गुरु स्वामी विरजानन्द और ईश्वर की प्रेरणा से ही किया था। हमें उनके मार्ग पर चलकर संसार को सत्य व असत्य के स्वरुप से परिचित कराना है। कोई सत्य वैदिक मत को स्वीकार करे या न करें, यह उसका निजी अधिकार है, परन्तु आर्यसमाज व इसके अनुयायियों को सत्य के प्रचार का अपना कर्तव्य निभाना है। 'सत्यमेव जयते नानृतं' की भांति सत्य देर में ही सही, विजयी अवश्य होता है। आगे भी होगा।

महर्षि दयानन्द प्राचीन वैदिक कालीन ऋषियों की परम्परा वाले वेदों के मंत्रद्रष्टा ऋषि थे। वह सफल व सिद्ध योगी होने के साथ समस्त वैदिक व इतर धर्माधर्म विषयक साहित्य के पारदर्शी विद्वान भी थे। उन्होंने मथुरा निवासी वैदिक व्याकरण के सूर्य प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती से आर्ष व्याकरण की अष्टाध्यायी-महाभाष्य पद्धति का अध्ययन किया था। इससे पूर्व भी आपने लगभग 30 वर्षों के अध्ययन काल (1833-1863) में उन्होंने विभिन्न गुरुओं व विद्वानों से लौकिक संस्कृत व्याकरण का अध्ययन किया था। गृहत्याग के बाद के लगभग 29 वर्षों में (1846-1875) आप देश के अनेक भागों के अनेक लोगों के सम्पर्क में आये। आपने देश में फैले हुए नाना मत मतान्तरों के अनुयायियों सहित उनके आचार्यों से सम्पर्क कर उनके मत के गुणागुणों व विशेषताओं सहित उनमें निहित सत्यासत्य को जानने का सत्प्रयास किया था। स्वामी दयानन्द ऐसे व्यक्ति नहीं थे जो किसी भी अविद्यायुक्त व मिथ्या बात को बिना पूरी परीक्षा व सन्तुष्टि के स्वीकार कर लेते। यही कारण था कि भारत के प्राय: सभी मत-मतान्तरों को जानने व समझने पर भी उनकी तृप्ति नहीं हुई थी। वह योग विद्या में प्रवृत्त हुए और उसमें दिन प्रतिदिन प्रगति करते रहे। उसका उन्होंने जीवन के अन्तिम क्षणों तक अभ्यास व पालन किया। नाना मत-मतान्तरों में से वह किसी एक मत के चक्रव्यूह में नही फंसे। ऐसा प्रतीत होता है कि वह जान गये थे कि भारत में प्रचलित किसी भी मत-मतान्तर में निभ्रात व सत्य पर आधारित मान्यतायें नहीं हैं। उन्हें योग ही प्रिय प्रतीत हुआ जिसका उन्होंने मन-वचन-कर्म से क्रियात्मक अभ्यास किया। इतना होने पर भी वह अभी सत्य विद्या व सद्ज्ञान की उपलब्धि के लिए आशान्वित व प्रयत्नशील थे। सन् 1857 का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम हो जाने व उसके बाद देश में कुछ शान्ति व स्थिरता बहाल होने पर वह सन् 1860 में मथुरा में दण्डी स्वामी प्रज्ञाचक्षु दिव्य गुरु विरजानन्द की संस्कृत पाठशाला में विद्या के अध्ययन के लिए पहुंचते हैं और लगभग 3 वर्ष अध्ययन कर सफल मनोरथ व कृतकार्य होते हैं। अध्ययन पूरा होने पर गुरुजी से दीक्षा लेते हैं और गुरु की आज्ञा के अनुसार असत्य व अविद्या से ग्रसित मतों के खण्डन व सत्य वैदिक मत की स्थापना के लिए प्रवृत्त होते हैं।

महर्षि दयानन्द के जितने भी किंचित विस्तृत व संक्षिप्त उपदेश उपलब्ध होते हैं उनसे यही पता चलता है कि वह वेद एवं वैदिक सिद्धान्तों का मण्डन करते थे। वेद से इतर वेद विरुद्ध मिथ्या मतों का वह युक्ति, तर्क व वेद के प्रमाणों के आधार पर खण्डन भी करते थे। वह सब श्रोताओं किंवा मत-मतान्तरों के आचार्यों को चुनौती भी देते थे कि वह अपने-अपने मत की मिथ्या मान्यताओं का निराकरण करें व सत्य मत वेद को अपनायें और यदि चाहें तो वह उनसे शास्त्रार्थ, वार्तालाप, चर्चा व शंका समाधान भी कर सकते हैं। हमें यह देख कर आश्चर्य होता है कि उन्हें सभी मत-मतान्तरों की उत्पत्ति, मान्यताओं एवं सिद्धान्तों का भी व्यापक ज्ञान था। ऐसा भी देखा गया है कि अनेक मतों के आचार्यों को अपने मत की मिथ्या मान्यताओं का परिचय नहीं होता था। वह तो अपने मत के प्रति अन्धी श्रद्धा व विश्वास के कारण उनको 'बाबा वाक्यं प्रमाण' के आधार पर आंखें बन्द कर स्वीकार करते थे और उनका पालन करते थे जबकि उनके मत सत्यासत्य की दृष्टि से असत्य मान्यताओं से मिश्रित होते थे। महर्षि दयानन्द के सामने आकर वह सभी निरुत्तर होकर लौट जाते थे। महर्षि दयानन्द के प्रचार के कारण मत-मतान्तरों के अनेकानेक विद्वानों व आचार्यों को अपने-अपने मत के मिथ्यात्व का ज्ञान हो गया था। वह उन्हें चुनौती देने व आमंत्रित करने पर भी शास्त्रार्थ व शंका समाधान तक के लिए उनके निकट नहीं आते थे और येन-केन प्रकारेण अपने मतानुयायियों को स्वामी दयानन्द जी की सभाओं में जाने के लिए निषिद्ध करते थे। प्राय: सभी मतानुयायियों की स्थिति यह थी कि वह अपने-अपने मत के आचार्यों के अनुचित आदेश को मानते थे और स्वामी दयानन्द की सभाओं में नहीं आते थे। इससे अनुमान किया जा सकता है कि अपने-अपने मत-मतान्तरों को अच्छा बताने वाले आचार्यों की क्या स्थिति थी। आज भी उस स्थिति में कोई अधिक अन्तर नहीं आया है। अब वह अधिक रूढ़िवादी और कट्टर हो गये हैं और अविद्यान्धकर से ग्रसित, हठ व दुराग्रह आदि से घिरे हुए हैं। अत: आज वेद मत के मण्डन सहित मत-मतान्तरों के खण्डन की महती आवश्यकता बनी हुई है। ऐसा होने पर ही मनुष्य जाति उन्नत व अपने-अपने जीवन के उद्देश्य को पूरा करने में सफल हो सकती है अन्यथा अविद्या के अन्धकार में पड़कर उनका यह मानव जीवन व्यर्थ व नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा।

महर्षि दयानन्द ने विश्व जन समुदाय पर एक बहुत बड़ा उपकार यह किया है कि उन्होंने अपने समय में केवल मौखिक प्रचार ही नहीं किया अपितु अपनी वैदिक विचारधारा, मान्यताओं व सिद्धान्तों के अनेक ग्रन्थों का प्रणयन भी किया। उनका प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश विश्व के धार्मिक व सामाजिक साहित्य में अन्यतम है। वेदों के बाद विश्व साहित्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि इसे 14 समुल्लासों व अध्यायों में लिखा गया है जिसमें प्रथम 10 अध्याय वैदिक मत का मण्डन करते हुए ईश्वर, जीव व प्रकृति सहित सभी विषयों व सामाजिक मान्यताओं पर वैदिक दृष्टिकोण व विचारों को प्रस्तुत करते हैं। इस अपूर्व ग्रन्थरत्न में प्राय: सभी आवश्यक विषयों की चर्चा कर तद्विषयक वैदिक दृष्टिकोण को तर्क व युक्ति सहित एवं अनेक स्थानों पर प्रश्नोत्तर शैली में प्रस्तुत कर उसे सरल व सहज बना दिया गया है। इन सिद्धान्तों की सत्यता का विश्वास एक साधारण हिन्दी पाठी मनुष्य भी आसानी से कर सकता है जो कि इस ग्रन्थ की रचना से पूर्व कदापि सम्भव नहीं था। संसार में अनेक लोगों ने इस ग्रन्थ को पढ़ा है और इससे सहमत होकर अपना मत परिवर्तन कर आर्यसमाज के अनुयायी बने हैं। आज आर्यसमाज में जितने भी सदस्य व परिवार हैं वह सब प्राय: सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन व प्रचार का ही परिणाम है। संसार में किसी विद्वान, मताचार्य व मतानुयायी में यह योग्यता नहीं है कि वह सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम से दशम समुल्लासों में व्यक्त विचारों, मान्यताओं, सिद्धान्तों सहित उसमें दी गई तर्क व युक्तियों का खण्डन कर सकें। यदि कभी किसी ने ऐसा करने का प्रयत्न किया है तो उसका आर्य विद्वानों ने तर्क, युक्ति व प्रमाण सहित समाधान कर दिया है। यह कोई सामान्य नहीं अपितु असाधारण बात है।

वैदिक सिद्धान्तों के आदर्श ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में वैदिक मान्यताओं का विस्तार से उल्लेख करने के बाद स्वामी दयानन्द उसके उत्तर भाग में आर्यवर्तीय व आर्याव्रत से बाहर के देशों में उत्पन्न मतों की समीक्षा करते हैं जिसमें सत्यासत्य की परीक्षा करते हुए असत्य विचारों व मान्यताओं का खण्डन भी किया गया है। सत्यार्थ प्रकाश का ग्यारहवां समुल्लास आर्यवर्तीय आस्तिक मतों की समीक्षा व खण्डन में लिखा गया है जिसका आरम्भ अनुभूमिका से होता है। यह भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण एवं विस्तृत है। इस अनुभूमिका में महर्षि दयानन्द ने मत-मतान्तरों के खण्डन में अपनी निष्पक्ष व सभी मतों के मनुष्यों के प्रति अपनी सद्भावना को प्रदर्शित किया है। उनके अनमोल व स्वर्णिम वाक्य है कि यह सिद्ध बात है कि पांच सहस्र वर्षों के पूर्व वेदमत से भिन्न दूसरा कोई भी मत भूगोल में न था क्योंकि वेदोक्त सब बातें विद्या से अविरुद्ध हैं। वेदों की अप्रवृत्ति होने का कारण महाभारत युद्ध हुआ। इन (वेदों) की अप्रवृत्ति से अविद्याऽन्धकार के भूगोल में विस्तृत होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर जिस के मन में जैसा आया वैसा मत चलाया। इन सब मतों में 4 चार मत अर्थात् जो वेद-विरुद्ध पुराणी, जैनी, किरानी और कुरानी (अन्य) सब मतों (मतों की शाखा-प्रशाखा रूप इकाईयों) के मूल हैं, वे क्रम से एक के पीछे दूसरा, तीसरा, चौथा चला है। अब इन चारों की शाखा एक सहस्र से कम नहीं हैं। इन सब मतवादियों, इनके चेलों और अन्य सब को परस्पर सत्याऽसत्य के विचार करने में अधिक परिश्रम न हो इसलिए यह ग्रन्थ (सत्यार्थ प्रकाश) बनाया है। महर्षि दयानन्द आगे लिखते हैं कि जो-जो इसमें सत्य मत का मण्डन और असत्य मत का खण्डन लिखा है वह सब को जनाना ही प्रयोजन समझा गया है। इसमें जैसी मेरी बुद्धि, जितनी विद्या और जितना इन चारों मतों के मूल ग्रन्थ देखने से बोध हुआ है उसको सब के आगे निवेदित कर देना मैंने उत्तम समझा है क्योंकि विज्ञान (धर्म व समाज विषयक सत्य ज्ञान) गुप्त (विलुप्त) हुए का पुनर्मिलना सहज नहीं है। पक्षपात छोड़कर इस (सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ) को देखने से सत्याऽसत्य मत सब को विदित हो जायेगा। पश्चात् सब को अपनी-अपनी समझ के अनुसार सत्यमत का ग्रहण करना और असत्य मत को छोड़ना सहज होगा। इनमें से जो पुराणादि ग्रन्थों से शाखा शाखान्तर रूप मत आर्याव्रत देश में चले हैं उनका संक्षेप से गुण व दोष इस (सत्यार्थ प्रकाश के) ग्यारहवें समुल्लास में दिखलाया जाता है। स्वामी दयानन्द सभी मतों के लोगों से अपेक्षा करते हुए कहते हैं कि 'इस मेरे कर्म से यदि उपकार न मानें तो विरोध भी न करें। क्योंकि मेरा तात्पर्य किसी की हानि व विरोध करने में नहीं किन्तु सत्याऽसत्य का निर्णय करने-कराने का है। इसी प्रकार सब मनुष्यों को न्याय दृष्टि से वर्तना अति उचित है। मनुष्य जन्म का होना सत्याऽसत्य का निर्णय करने कराने के लिये है न कि वाद-विवाद विरोध करने कराने के लिये। इसी मत-मतान्तर के विचार से जगत् में जो-जो अनिष्ट फल हुए, होते हैं और आगे होंगे, उन को पक्षपात् रहित विद्वज्जन जान सकते हैं।'

मत-मतान्तरों के खण्डन-मण्डन के सदर्भ में स्वामी दयानन्द जी कहते हैं कि जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मत-मतान्तर का विरूद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्वज्जन ईर्ष्या-द्वेष छोड़ सत्याऽसत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना कराना चाहें, तो हमारे लिये यह बात असाध्य नहीं है। यह निश्चय है कि इन विद्वानों के विरोध ही ने सब को विरोध जाल में फंसा रखा है। यदि ये लोग अपने प्रयोजन (हित वा स्वार्थ) में न फंस कर सब के प्रयोजन को सिद्ध करना चाहें तो अभी ऐक्यमत हो जायें। इसके होने की युक्ति (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश के अन्तर्गत (इस ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश) की पूर्ति पर लिखेंगे। सर्वशक्तिमान् परमात्मा एक मत (वैदिक मत) में प्रवृत्त होने का उत्साह सब मनुष्यों की आत्माओं में प्रकाशित करे। स्वामी जी ने उपर्युक्त पंक्तियों में मत-मतान्तरों की परस्पर विरोधी मान्यताओं के खण्डन के अपने आशय को स्पष्ट कर उसकी आवश्यकता व अपरिहार्यता पर प्रकाश डाला है। उनका ऐसा करना उचित, न्यायसंगत व प्रशंसनीय था तथा सभी विद्वान व ज्ञानी कहलाने वाले मतों के आचार्य व अनुयायियों को उसी भावना से उनके खण्डन को समझ कर स्वीकार करना चाहिये अन्यथा उनके ज्ञान व विद्वता का कोई महत्व व उपयोग प्रतीत नहीं होता।

सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में स्वामी दयानन्द ने आर्यावर्त की महत्ता का वर्णन कर शंकराचार्य के अद्वैतमत, वाममार्ग, शैवमत, वैष्णवमत, सभी प्रकार की अवैदिक मूर्तिपूजा, तन्त्र ग्रन्थ, गया श्राद्ध, हरिद्वार आदि तीर्थों, अवैदिक गुरु माहात्म्य, अठारह पुराण, ग्रहों का फल, गरुड़ पुराण की मिथ्या बातें, ब्राह्म समाज और प्रार्थना समाज आदि मतों की समीक्षा व खण्डन कर उनकी मिथ्या बातों का युक्ति व तर्क के साथ खण्डन किया है। इसी प्रकार बारहवें से चौदहवें समुल्लासों में जैन-बौद्ध मत, ईसाई व कुरानी मत की समीक्षा कर इनके मिथ्यात्व पर प्रकाश डाला है जिससे कि इन व अन्य मतों के सभी अनुयायी व निष्पक्ष जिज्ञासु सरलता से सत्याऽसत्य का निर्णय कर सकें।

महर्षि दयानन्द

...शेष पेज 5 पर

आर्य विद्या परिषद दिल्ली की वार्षिक बैठक 7 मई 2016 को आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट–2 में सम्पन्न

दिल्ली की समस्त आर्य शिक्षण संस्थाआं में होगी बच्चों की कार्यशाला – सुरेन्द्र रैली

आर्य शिक्षण संस्थाओं की स्मारिका का होगा विमोचन | दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों में शिक्षकों की होगी कार्यशालाएं | अन्तर्विद्यालयी प्रतियोगिताओं का आयोजन

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली की बैठक शनिवार, 7 मई 2016 को महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल ग्रेटर कैलाश पार्ट–2 में आर्य समाज के प्रधान श्री प्रियव्रत जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में आर्य विद्या परिषद के प्रस्तोता श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, श्रीमती उमा शशि दुर्गा, श्रीमती बाला चौधरी, श्रीमती शालिनी जावा, श्रीमती वीना आर्या, श्रीमती तृप्ता शर्मा एवं विभिन्न आर्य विद्यालयों के चेयरमैन, प्रबन्धक, प्रधानाचार्य/ प्रधानाचार्या, अध्यापक/ अध्यापिकाएं उपस्थित रहे।

बैठक की शुरुआत विद्यालय के छात्रों द्वारा गायत्री मंत्र एवं ईश्वरस्तुति प्रार्थना उपासना के मंत्रों (अर्थ सहित) द्वारा की गई। श्री राजीव आर्य जी आर्य केन्द्रीय सभा के महामंत्री एवं एस.एम.आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग के कर्मठ कार्यकर्त्ता को याद करते हुए सभी ने दो मिनट का मौन रखा। श्री सुरेन्द्र रैली जी ने पिछली बैठक की कार्यवाही पढ़कर सुनाई जिस पर सभी ने अपनी सहमति देते हुए उसकी सम्पुष्टि की। सत्र 2015–2016 में आर्य विद्या परिषद् की विभिन्न गतिविधियों, अन्तर्विद्यालयी प्रतियोगिताओं का आयोजन, विद्यालयों का निरीक्षण करवाना व सुझाव देना आदि कार्यों की सराहना की गई। पिछली बैठक में

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा था 'यज्ञ द्वारा ही मानव का कल्याण सम्भव है। ऋषि विश्वामित्र यज्ञों की रक्षा के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम व लक्ष्मण को लेकर वन में गए थे। श्री कृष्ण जी भी नित्य यज्ञ कते थे।' इसी बात का समर्थन करते हुए श्री रैली जी ने यज्ञ के महत्त्व की विस्तार से चर्चा की और कहा 'महर्षि दयानन्द ने संस्कार विधि व सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि मनुष्य प्रतिदिन इतना प्रदूषण करता है कि उसे कम से कम यज्ञ में 16 आहुतियाँ अवश्य देनी चाहिए। जितना प्रदूषण हम करते हैं इसकी निवृत्ति के लिए यज्ञ का प्रचार–प्रसार करें व पेड़ लगाएं।

आर्य विद्यालयों की समस्त जानकारी के लिए स्मारिका के प्रकाशन पर चर्चा की गई व कहा कि सभी 31 जुलाई तक विषय सामग्री अवश्य भिजवा दें ताकि यह समय पर प्रकाशित हो सके।

शिक्षकों के लिए वर्कशॉप (कार्यशाला) : ग्रीष्मावकाश में होने वाली वर्कशाप की प्रमुखता है– नैतिक शिक्षा, आर्य समाज के सिद्धान्तों पर चर्चा अध्यापक कैसे पढ़ाएं? पढ़ाने की शैली में क्या परिवर्तन कर सकते हैं। छात्रों की बुद्धि का विकास कैसे किया जाये इस पर चर्चा होगी। समय प्रातः 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक रहेगा।

बच्चों की वर्कशाप जुलाई से शुरु होगी। संस्कार, सैल्फ स्टडी कैसे करें? मैटीरियल व चार्टस आदि भी दिये जाएंगे। यह वर्कशॉप बहुत ही रुचिकर होती है। समय प्रातः 8.30 बजे का होगा। दिन व तारीख विद्यालय स्वयं निर्धारित करेगा।

अन्तर्विद्यालयी प्रतियोगिताओं का आयोजन जुलाई व अगस्त माह में होगा। श्री विनय आर्य जी ने कहा कि सभी प्रतियोगिताओं के रंगीन चित्र व परिणाम आर्य सन्देश में विशेष रूप से प्रकाशित किए जायेंगे। खेलकूद प्रतियोगिताएं एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल में होंगी। सभी विद्यालयों के अधिकारियों से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में छात्रों को भेजें। इसके लिए तीन लोगों की समिति बनाई गई। आर. एम. आर्य सी. सै. स्कूल से श्री संजय कुमार जी, महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल शादीपुर से श्री कृपाल सिंह जी एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल से श्री रावत जी। श्री विनय आर्य जी ने पुस्तकें, कॉमिक्स, नैतिक शिक्षा लघु सत्यार्थ प्रकाश, सी. डी. के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि ये पुस्तकें बच्चों को पुरस्कार स्वरूप दी जानी चाहिए। इसके पश्चात् अध्यक्ष श्री प्रियव्रत जी ने सभी का धन्यवाद करते हुए कहा 'कि हमारा आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट–2 हमेशा अपनी सेवाओं के लिए तैयार रहेगा। कोई भी कार्यक्रम यहां रखें हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। शान्तिपाठ के साथ बैठक समाप्त हुई।

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा आर्य विद्यालयों के शिक्षकों के लिए कार्यशालाओं का आयोजन प्रारम्भ

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट–2 में शुक्रवार, 13 मई 2016 को दक्षिण दिल्ली के सभी विद्यालयों के शिक्षकों की कार्यशाला सम्पन्न हुई। इस कार्यशाला में रतन चन्द आर्य पब्लिक स्कूल, (सरोजनी नगर) महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल (ग्रेटर कैलाश पार्ट–2), आर्य शिशुशाला (ग्रेटर कैलाश पार्ट–1), चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर (ईस्ट ऑफ कैलाश), महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल (श्रीनिवासपुरी), दयानन्द मॉडल स्कूल (मालवीय नगर), महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल (अमर कॉलोनी) के लगभग 100 अध्यापक/अध्यापिकाओं ने भाग लिया।

श्रीमती प्रतिभा जी ने सारगर्भित भाषण देते हुए कहा कि 'बच्चे हमेशा शिक्षक को अपना आदर्श मानते हैं इसलिए अध्यापिकाओं को अपने व्यवहार एवं वेशभूषा का ध्यान रखना चाहिए। कक्षा में तैयारी के साथ पढ़कर जाना चाहिए।' डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने लगभग डेढ़ घण्टा धारा प्रवाह बोलते हुए कहा 'उत्तम शिक्षक कैसे बनें? वाणी और कर्म एक होना चाहिए। विचारों से ही मनुष्य

ऊंचाइयों पर पहुँचता है व नीचे गिरता है।'

श्री विनय आर्य जी ने कहा 'अपने कर्त्तव्य का पालन करना ही सबसे बड़ा धर्म है। ईश्वर सर्वव्यापक है, न्यायकारी है। वह हर पल हर जगह हमें देखता है।' अनेक घटनाओं का उदाहरण देते हुए उन्होंने कार्यशाला को रुचिकर बनाया।

सभी अध्यापिकाओं ने कहा 'इस तरह की कार्यशाला होती रहनी चाहिए।' अन्त में आर्य समाज के प्रधान श्री प्रियव्रत जी ने सबका धन्यवाद किया शान्तिपाठ के साथ कार्यशाला सम्पन्न हुई। कार्यक्रम में एक निमन्त्रण, महर्षि दयानन्द सरस्वती, आर्य समाज की मान्यताएं, व्यवहारभानु एवं जीवन का उद्देश्य पुस्तकें स्वाध्याय के लिए दी गई। सभी के लिए स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट–2 की ओर से की गई।

कोटा सांसद ने पक्षियों के लिए परिण्डे बांधे

पक्षियों के लिए पानी के परिण्डे बांधना हमारी भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है उक्त विचार कोटा सांसद ओम प्रकाश बिडला ने स्वनिवास पर जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा द्वारा परिण्डे बांधने के अवसर पर व्यक्त किए। इस अवसर पर सभा प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने कहा कि प्राणिमात्र की सेवा ही आर्य विचार धारा है। जो वैदिक संस्कृति की देन है। आर्य विद्वान अग्निमित्र शास्त्री ने मंत्रोच्चारण कर सांसद के कर कमलों द्वारा परिण्डे बांधने का कार्य प्रारंभ किया।

–अर्जुन देव चड्ढा प्रधान

पृष्ठ 1 का शेष

आर्यसमाज डीसीएम रेलवे ...

सहयोग इस आर्य समाज के भवन को भव्यतम रूप देने के लिए दिया जाएगा। क्षेत्रिय विधायक श्री विशेष रवि ने आर्यजनों को संबोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज मंदिर का पुनर्निर्माण हम सबके सहयोग का परिणाम है। इस भवन को और अधिक सुन्दर एवं भव्य बनाने के लिए आप द्वारा मुझ से जिस भी सहयोग की अपेक्षा की जाएगी मैं अवश्य करूंगा।

जब से यह आर्यसमाज मन्दिर ध्वस्त किया गया और गत पांच महिनों से दिन-रात नियमित रूप से मन्दिर पुनर्निर्माण कार्य में सहयोग देने वाले श्री अरुण प्रकाश वर्मा हार्दिक धन्यवाद किया गया। इस अवसर पर भवन निर्माण में सहयोग देने वाले कार्यकर्त्ताओं-श्री अमरनाथ गोगिया, श्री आदर्श कुमार, श्री सुभाष कोहली, श्री कीर्ति शर्मा, श्रीमती ममता शर्मा, श्री वागीश शर्मा, श्री चन्द्र मोहन आर्य एवं श्री रणधीर आर्य जी को सभा की ओर से पीत वस्त्र एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे श्री प्रवीण जैन जी, श्रीमती नीलम धीमान (सदर पहाड़ गंज जॉन), महापौर श्री संजीव नैयर ने भी संबोधित किया।

उद्घाटन करते महाशय धर्मपाल जी, पूर्व महापौर रविन्द्र गुप्ता जी, श्री सुभाष कोहली जी एवं अन्य आर्यजन।

सभी उपस्थित अतिथि महानुभावों को स्मृति चिह्न के रूप में सुन्दर ओ३म फ्रेम भेंट किया गया। इस अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में केन्द्रिय मंत्री डॉ. हर्षवर्धन जी का आमंत्रित किया गया था किन्तु किन्हीं कारणों से वे उपस्थित नहीं हो सके। उनके प्रतिनिधि श्री गुलशन विरमानी जी ने उनका संदेश लोगों को पढ़कर सुनाया।

श्री शिशुपाल आर्य एवं उनके साथियों ने सुन्दर भजन प्रस्तुति कर के सभी श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। समारोह को सफल बनाने में आर्यसमाज करोल बाग, डोरीवालान, मॉडल बस्ती, देव नगर मुल्तान, प्रताप नगर, पुल बंगश, बिड़ला लाइन्स, पहाड़ी धीरज सदर बाजार का विशेष सहयोग रहा।

...शेष पेज 6 पर

उद्घाटन समारोह के अवसर पर आयोजित यज्ञ में भाग लेते यज्ञमान परिवार एवं उद्बोधन देते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महाशय धर्मपाल जी, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, श्री बृजेश गौतम, श्री विशेष रवि एवं श्री प्रवीन जैन।

कार्यकर्त्ताओं का सम्मान-सर्व श्री अमर नाथ गोगिया, वागीश शर्मा, कीर्ति शर्मा, आदर्श कुमार, चन्द्र मोहन आर्य, ममता आर्या, रणधीर आर्य, श्री सुभाष कोहली, श्री गुलशन विरमानी जी एवं श्री प्रवीण जैन का सम्मान।

भजन प्रस्तुत करते श्री शिशुपाल आर्य एवं साथी, आर्य वीरांगना दल जनकपुरी का सम्मान, समरोह में उपस्थित श्री प्रेम अरोड़ा जी, मनोज गुलाटी जी, अरुण प्रकाश जी, शिव कुमार मदान जी, सतीश चड्ढ़ा जी एवं विभिन्न आर्य समाजों से पधारे आर्य महानुभाव।

पृष्ठ 3का शेष

'अविद्यायुक्त असत्य धार्मिक ...

के उपर्युक्त वाक्यों से यह विदित होता है कि उनका मत-मतान्तरों की समीक्षा व खण्डन का हेतु सभी मतों के लोगों को मत-पन्थों के धर्म ग्रन्थों में निहित मिथ्या मान्यताओं का ज्ञान कराना था। ऋषि ने ऐसा क्यों किया? यदि न करते तो क्या हानि थी? अन्य मतों के आचार्यों व विद्वानों ने तो ऐसा नहीं किया तो फिर महर्षि दयानन्द को इनके खण्डन करने की क्या मजबूरी थी? इनका उत्तर है कि ऋषि ने मत-मतान्तर की असत्य मान्यताओं का खण्डन इस लिये किया कि वह विद्वान थे और विद्वान वही होता है जो सत्य को ग्रहण करे व कराये और असत्य को छोड़े व छुड़वाये। वह व्यक्ति विद्वान नहीं कहला सकता जो जानते हुए भी असत्य का खण्डन नहीं करता। एक डाक्टर यदि रोगी का उपचार न करे तो क्या वह डाक्टर कहला सकता है? कदापि नहीं। यदि वह रोगी का उपचार करता है तभी वह डाक्टर है। दर्जी यदि लोगों के कपड़े को उसके दाता की नाप के अनुसार काट-छांट कर नहीं सिलता तो वह दर्जी किसी काम का नहीं होता। यदि नाप में न्यूनता व अधिकता करता है तो भी वह अच्छा दर्जी नहीं हो सकता। महर्षि दयानन्द ने भी मतों की असत्य बातें जिनसे मतानुयायियों को हानि होती है, उनसे परिचित कराकर उनके उस असत्यता के रोग को दूर कर उचित मात्रा में उन्हें सत्य का यथार्थ ज्ञान कराया जिससे वह तदनुसार आचरण कर अपना जीवन सफल बना सके जो कि परम्परा के अनुसार चलने से नहीं बन सकता था। किसान भी फसल की अच्छी पैदावार के लिए खेत में हल चलाकर भूमि को पोला व नरम करता है। उसमें पानी व खाद डालता है जिससे बीज अच्छी प्रकार से पल्लवित और पुष्पित हो सके। खेत में हल चलाना, खाद व पानी डालना, निराई व गुड़ाई करना व अन्त में बोई गई फसल को काटना व उनसे अन्न के दाने निकालना, यह एक प्रकार का खण्डन व मण्डन दोनों ही है। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो हमें अन्न प्राप्त नहीं होगा। यही सृष्टि का नियम है। यही नियम माता-पिता द्वारा सन्तान को शिक्षित करने के लिए ताड़ना करने व डाक्टर द्वारा गम्भीर रोगों की चिकित्सा करने में शल्य क्रिया करने, यदा-कदा हाथ व पैर तक काट डालने आदि की तरह, असत्य का खण्डन व सत्य का मण्डन अर्थात् जो ठीक है, उसे नहीं छेड़ना यथावत् रहने देना रूपी मण्डन है। सभी क्षेत्रों में सभी लोग आवश्यकतानुसार खण्डन व मण्डन करते हैं। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो सभी मतों के आचार्यों ने अपने पूर्व मतों व उनके आचार्यों की मान्यताओं का खण्डन कर ही स्वमत को स्थापित किया। यदि वह सब ऐसा कर सकते थे तो मनुष्य मात्र के हित व उन्नति की दृष्टि से महर्षि दयानन्द द्वारा किया गया खण्डन उचित क्यों नहीं? उनका खण्डन करना सर्वथा उचित है।

महर्षि दयानन्द का उद्देश्य संसार के मनुष्यों को मत-मतान्तरों के जाल से निकाल कर उन्हें उनसे स्वतन्त्र कराना व सच्चिदानन्द, सर्वव्यापक, निराकार, घट-घट में व्यापक व सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान ईश्वर की सच्ची स्तुति, प्रार्थना व उपासना में लगाना था। इससे मनुष्यों को इस जन्म व परजन्म, दोनों में ही, सभी प्रकार की उन्नति अभ्युदय व निःश्रेयस का लाभ मिलना निश्चित था। यदि धर्मान्तरण कर अपनी संख्या में वृद्धि करने वाले सत्यासत्य से मिश्रित मान्यताओं के मतों को अपना-अपना प्रचार व खण्डन मण्डन का अधिकार है तो फिर महर्षि दयानन्द को सत्य का मण्डन व असत्य के खण्डन का अधिकार क्यों नहीं? स्वामी दयानन्द जी ने ईश्वर प्रदत्त अधिकार का उपयोग किया, लोगों को असत्य से दूर किया व सत्य को प्राप्त कराया, इस कारण सारी मनुष्य जाति उनकी ऋणी है। ईश्वर सर्वशक्तिमान है। महर्षि दयानन्द ने खण्डन का कार्य अपने गुरु स्वामी विरजानन्द और ईश्वर की प्रेरणा से ही किया था। हमें उनके मार्ग पर चलकर संसार को सत्य व असत्य के स्वरुप से परिचित कराना है। कोई सत्य वैदिक मत को स्वीकार करे या न करें, यह उसका निजी अधिकार है, परन्तु आर्यसमाज व इसके अनुयायियों को सत्य के प्रचार का अपना कर्तव्य निभाना है। 'सत्यमेव जयते नानृतं' की भांति सत्य देर में ही सही, विजयी अवश्य होता है। आगे भी होगा। ईश्वर संसार के मनुष्य के हृदय में सत्य व असत्य को जानने, सत्य को ग्रहण करने एवं असत्य का त्याग करने की प्रेरणा करे, यही उससे प्रार्थना है।

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आओ संस्कृत सीखें

देवनागरी लिपि के स्वर और व्यंजन; ध्वनियों का वर्गीकरण, शुद्ध उच्चारण का महत्त्व

-आचार्य संदीप कुमार उपाध्याय

गतांक से आगे....

संस्कृत भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। आप अनेक वर्ष तक देवनागरी लिपि में हिन्दी पढ़ते रहे हैं अत: आपके लिए देवनागरी लिपि में संस्कृत पढ़ना कठिन नहीं होना चाहिए। पर यह अच्छा होगा यदि हम देवनागरी लिपि की विशेषताओं पर एक बार फिर ध्यान दें लें ताकि संस्कृत सीखने में हमें और अधिक सुवधा हो सके।

1.1 स्वर - संस्कृत में 10 प्रमुख स्वर हैं जिनमें से तीन स्वर ह्रस्व हैं और सात स्वर दीर्घ हैं:

ह्रस्व स्वर - **अ, इ, उ**

दीर्घ स्वर - **आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ,**

इनमें से आ, ई और ऊ क्रमश: अ, इ और उ के दीर्घ रूप हैं, अर्थात् इनका उच्चारण उसी प्रकार किया जाता है जिस प्रकार ह्रस्व स्वरों का किन्तु इनके उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की तुलना में दुगुना समय लगता है।

ए और **ओ** का उच्चारण संस्कृत और हिन्दी में एक समान है, पर **ऐ** और **औ** के उच्चारण में अंतर है और इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। हिन्दी के है शब्द में स्वर का जो उच्चारण है वह संस्कृत के **वै** के स्वर के उच्चारण से बहुत भिन्न है। हिन्दी के **भैया** शब्द में पहले स्वर का उच्चारण संस्कृत के **ऐ** के उच्चारण के निकट है। संस्कृत ऐ का उच्चारण अ और इ स्वरों को तुरन्त एक के बाद एक उच्चारित करने से होता है। इसी प्रकार संस्कृत के **भौतिक** शब्द में पहले स्वर का उच्चारण हिन्दी के और शब्द के स्वर जैसा नहीं है। वह **कौआ** शब्द के **औ** के उच्चारण के निकट है। संस्कृत में **औ** का उच्चारण **अ** और **उ** स्वरों को तुरन्त एक के बाद एक उच्चारित करने से होता है।

इन दस स्वरों के अतिरिक्त संस्कृत में ऋ, ॠ और ऌ ये तीन स्वर और हैं। इनका स्वर के रूप में उच्चारण अब लुप्त हो गया है। इनका उच्चारण अब प्राय: **र्, ल्** व्यंजनों और **इ, ई** स्वरों के योग के रूप में क्रमश: **रि, री** और **लि** की तरह होता है। इस प्रकार संस्कृत में कुल निम्नलिखित तेरह स्वर हैं:

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ ।

टिप्पणी : 1. भारत के कुछ पश्चिमी और दक्षिण भागों में ऋ का उच्चारण रु की तरह होता है।

2. यद्यपि **ऋ, ॠ** और **ऌ** का उच्चारण अब स्वर के रूप में नहीं होता, पर संस्कृत व्याकरण में इन्हें स्वर ही माना गया है। इस बात को ध्यान में रखना महत्त्वपूर्ण है।

3. **ऋ** के दीर्घ रूप ॠ की तरह ऌ का भी दीर्घ रूप ऌ है पर इसका प्रयोग संस्कृत के किसी वास्तविक शब्द में नहीं होता।

1.2 व्यंञ्जन- स्वरों के उच्चारण में फेफड़ों से बाहर आती हुई हवा लगभग बिना रुकावट के बाहर निकलती है। व्यंजनों के उच्चारण में कण्ठ से लेकर ओठों तक के मार्ग में हवा विभिन्न स्थानों को स्पर्श करती हुई बाहर आती है। इस प्रकार व्यंजनों में पहला भेद उनके उच्चारण के स्थान की दृष्टि से होता है। दूसरा भेद उनके उच्चारण के प्रयत्न की दृष्टि से होता है। कुछ व्यंजनों के उच्चारण में फेंफड़ों की हवा अधिक बल के साथ बाहर आती है। इन व्यंजनों को महाप्राण कहते हैं। कुछ व्यंजनों के उच्चारण में कंठ में स्थित स्वरतंत्रियों में कम्पन होता है, इन व्यंजनों को **घोष** कहते हैं। कुछ व्यंजनों के उच्चारण में हवा मुख के साथ-साथ नाक से भी बाहर आती है, ऐसे व्यंजनों को **नासिक्य** कहते हैं। स्थान और प्रयत्न की दृष्टि से संस्कृत के व्यंजनों का विभाजन नीचे सारणी में दिया गया है।

व्यञ्जन

(क) स्पर्श					
प्रयत्न	अघोष अल्पप्राण	अघोष महाप्राण	घोष अल्पप्राण	घोष महाप्राण	घोष नासिक्य
उच्चारण स्थान					
कण्ठ्य	क	ख	ग	घ	ङ
तालव्य	च	छ	ज	झ	ञ
मूर्धन्य	ट	ठ	ड	ढ	ण
दन्त्य	त	थ	द	ध	न
ओष्ठय	प	फ	ब	भ	म

(ख) अर्धस्व र य र ल व (घोष)

(ग) ऊष्म (अघोष) श ष स

(घ) **कंठय महाप्राण** : ह

अनुस्वार और अनुनासिक ं ॉ

1.3 सरल व्यंजन- आइए, इन व्यंजनों के विभिन्न वर्गों पर क्रमश: विचार करें। पहले कालम के पाँच व्यंजन **(क च ट त प)** अपने, अपने उच्चारण स्थानों पर जीभ या ओठों के द्वारा हवा के सामान्य रूप से रुकने से उच्चारित होते हैं। इन व्यंजनों के उच्चारण में और कोई विशेष बात नहीं है इसलिए हम इन्हें सरल व्यंजन कहेंगे। ये अघोष अल्पप्राण है। इनका उच्चारण कण्ठ के भीतरी भाग से प्रारंभ होकर ओठों पर समाप्त होता है। **क्रमश:**

Continue from last issue

Glimpses of the Atharva Veda

-Priyavrata Das

Jangida, the Plant of Protection

"Uttering the name of the resplendent Lord, the seers have given the Jangida, out of which from the very beginning, the enlightened ones have prepared a medicinal remedy, what is known as remover of splitting pain is shoulders."

"May the Jangida make poweriess the crushing pain of lumbago, the bursting pain of arthrites, as well as the consumptive cough and the disease of the ribs known as pleurisy and the fever affecting every autumn."

"Me from sky, me from earth, me from midspace, me from plants, me from the present and me from the future, from each and every quarter, may the Jangida, protect me all through".

इन्द्रस्य नाम गृह्णन्त ऋषयो जंगिडं ददु:।

देवा यं चकुर्भेषजमग्रे विष्कन्धदूषणम्।।(Av.xix.35.1)

Indrasya nama grhnanta rsayo jangidam daduh.

deva yam cakrurbhesajamagre viskandhadusanam..

आशरीकं विशरीकं बलासं पृष्टयामयम्।

तक्मानं विश्वशारदमरसां जङ्गिडस्करत्।।(Av.xix.34.10)

Asarikam visarikam balasam prstyamayam.

takmanam visvasaradamarasam jangidaskarat..

परि मा दिवि: परि मा पृथिव्या: पर्यन्तरिक्षात्परि मा बीरुद्भ्य:।

परि मा भूतात्परि मोत भव्याद्विशोदिशो जंगिड: पात्स्मान्।।(Av.xix.35.4)

Pari ma divah pari ma prthivyah paryantariksatpari ma birudbhyah.

pari ma bhutatpari mota bhavyadvisodiso jangidah patvasman..

Medicine to Get a Male child

Chapter VI, hymn II has two verses that indicate treatment of a woman to obtain a son. The first verse says, Asvattha (holy fig tree) mounted on a Sami (mimosa sunsa) when administered to a woman helps in begetting a son and thus, male birth is assured.

The five ingredients: root, bark, leaf, flower and fruit of the holy fig tree mounted on a Sami tree are powdered and administered with milk to a woman. This strengthens retention of a male child in her womb. The pregnant woman shall live a disciplined life with sublime thoughts.

Chapter IV, hymn 4 prescibes herbs by name Vrsamedha, asva, rsabha to enrich the semen of the husband : "O medicinal herb, we dig you that heips in erecting of penis. May you put in the man the potency of the medicinal plant " Vusa" which has the strength of bulls and the virlity of men."

शमीमश्वत्थ आरूढस्तत्र पुंसुवनं कृतम्।

तद्वै पुत्रस्य वेदनं तत्स्त्रीष्वा भरामसि।।(Av.iv.11.1)

Samimasvathha arudhastatra punsuvanam krtam.

tadvao putrasya vedanam tatstrisva bharamasi..

Peari Shell

"with you the peari shell, who are foremost among the glittering ones, and who are born from the ocean, having killed the germs, we over-power, the flesh-eating worms, the devourers."

"We banish disease as well as ignorance with peari shell. With peari shell, we banish the perpetual bewailers. The pearl shell is all healing panacea for us. May the peari protect us from evil."

"The peari jewel is born from the ocean as the sun is born from the covering cloud. May that jewel protect us from all sides from the weapons of the enlightened ones and of the evil ones."

यो अगृतो रोचनानां समुद्रादधि जज्ञिषे।

शंखेन हत्वा रक्षांस्यत्त्रिणो वि षहामहे।।(Av.iv.10.2)

Yo agrato rocananam samudradadhi jajnise.

sankhena hatva raksansyattrino vi sahamahe..

शंखेनार्मावाममतिं शंखेनोत सदान्वा:

शखो नो विश्वभेषज: कृशन: पात्वंहस:।।(Av.iv.10.3)

Sankhenamivamamatim sankhenota sadanvah.

sarikho no visvabhesajah krsanah patvamhasah..

समुद्राज्जातो मणिर्वृत्राजातो दिवाकर:।

सो अस्मान्त्सर्वत: पातु हेत्या देवासुरेभ्य:।।(Av.iv.10.5)

Samudrajjato manirvrtramjato divakarah.

so asmantsarvatah patu hetya devasurebhyah..

To Be Continue...

पृष्ठ 5 का शेष

आर्यसमाज डीसीएम रेलवे ...

दि.आ.प्र. सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी, कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, श्रीमती शारदा आर्य (संचालिका, आर्य वीरांगना दल) सहित विभिन्न आर्य आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं गुरुकुलों के अधिकारियों एवं सदस्य महानुभावों ने अपनी उपस्थित दर्ज कराई। गुरुकुल रानीबाग, गुरुतेग बहादुर नगर के ब्रह्मचारियां, आर्य वीरांगना दल जनकपुरी की बालिकाओं ने सुमधुर गीत एवं शांति पाठ का वाचन किया। सभा की ओर से उन्हें स्मृति चिह्न देकर सम्मनित किया गया।

समारोह का शुभारंभ पंडित जयप्रकाश शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ से किया गया। इस अवसर पर यज्ञमान के रूप में श्रीमती उषा एवं श्री सुभाष चांदना जी, श्रीमती शकुन्तला एवं श्री बलदेव मदान जी, श्रीमती ममता एवं श्री दिनेश शर्मा जी, श्रीमती प्रिया एवं श्री अश्विनी शर्मा जी ने सहपरिवार भाग लेकर अपनी आहुतियां प्रदान की। यज्ञ की सम्पूर्ण व्यवस्था श्री आदर्श कुमार ने की। स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने उपस्थित यज्ञमान परिवारों एवं आर्यजनों को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का शिविर जम्मू में दिनांक 5 जून से 12 जून 2016

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर इस बार जम्मू शहर में 5 से 12 जून 2016 तक लगाया जाएगा। इसमें भाग लेने के लिए 14 वर्ष से अधिक आयु की वे वीरांगनाएं जिन्होंने पहले भी कम-से-कम दो शिविरों में भाग लिया हो, आ सकती हैं। दिनांक 15 मई 2016 तक अपने नाम निम्नलिखित नम्बरों पर दे दें ताकि व्यवस्था सुचारु रूप से हो सके।

साध्वी डॉ.उत्तमा यति	मृदुला चौहान	आरती खुराना	विमला मलिक
प्रधान संचालिका	संचालिका	सचिव	कोषाध्यक्षा
96722-86863	98107-02760	99102-34595	98102-74318

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर

स्थान : एस.एम.आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग पश्चिम, नई दिल्ली-26

उद्घाटन	समापन
6 जून सायं 5 बजे	19 जून प्रातः 10 बजे से

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा आयोजित राष्ट्रीय शिविर में शाखानायक, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी के शारीरिक एवं बौद्धिक पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण योग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा। शिविर में दशम कक्षा उत्तीर्य आर्य वीर ही प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे।

प्रवेश शुल्कः शाखानायक 300/-, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक 500/- शिविरार्थी को पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी। **आवश्यक सामान :** गणवेश-खाकी हाफ पैण्ट, सफेद सैण्डो बनियान, सफेद जूते, सफेद मोजे, लंगोट, लाठी, नोटबुक, हल्का बिस्तर, थाली, चम्मच, गिलास एवं अन्य दैनिक उपयोगी सामान। **नोट :** शिविरार्थी स्थानीय आर्य समाज या आर्य वीर दल के अधिकारी का संस्तुति पत्र अथवा आर्य वीर दल के प्रशिक्षण का प्रमाण पत्र और अपने दो चित्र साथ लाएं। शिविर में उन्हें ही प्रवेश दिया जायेगा जो आर्य वीर दल की शाखा में जाते हैं अथवा जिन्होंने आर्य वीर प्रथम श्रेणी का प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य	जगबीर आर्य	सत्यवीर आर्य	स्वामी देवव्रत	सत्यानन्द आर्य	अरविन्द नागपाल
प्रधान	संचालक	महामन्त्री	प्र. संचालक	प्रधान	प्रबन्धक
दि.आ.प्र.सभा	आ.वी.द. दिल्ली	सार्वदेशिक आर्य वीर दल		एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल	

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में
सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर
30 मई से 5 जून 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा देहरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर इस वर्ष भी आयोजित किया जा रहा है। जाने वाले शिविरार्थी 29 मई सायं 9 बजे आई.एस.बी.टी. कश्मीरी गेट दिल्ली से प्रस्थान करेंगे तथा 5 जून 2016 को सायं 3 बजे दिल्ली के लिए वापस रवाना होंगे। जो शिविरार्थी ट्रेन से जाना चाहें अपनी सुविधानुसार रेलवे आरक्षण स्वयं करवा लें। शिविर शुल्क प्रति शिविरार्थी 1100/- देय होगा। जिसमें आने-जाने का मार्ग व्यय (सामान्य बस द्वारा) सम्मिलित है। शिविर में जाने वाले शिविरार्थी अपना शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय 15 हनुमान रोड, दिल्ली-01 में जमा करवा दें। - **सुखवीर सिंह आर्य,** संयोजक, मो. 09540012175

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में
35वां वैचारिक क्रान्ति शिविर
उद्घाटन : 22 मई, 2016 समापनः 29 मई, 2016

स्थान : आर्यसमाज रानी बाग, मेन बाजार, दिल्ली-110034

आर्यजन दोनों कार्यक्रमों में अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें।

महाशय धर्मपाल	धर्मपाल गुप्ता	जोगेन्द्र खट्टर	योगेश आर्य
प्रधान	व.उ. प्रधान	महामन्त्री (9810040982)	कोषाध्यक्ष

वैदिक सत्संग मण्डल के तत्त्वावधान में चतुर्वेद शतकम् ब्रह्ममहापारायण यज्ञ सम्पन्न

वैदिक सत्संग मण्डल (आर्य समाज) सैक्टर 15 रोहिणी के तत्त्वावधान में आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष में चतुर्वेद शतकम् ब्रह्ममहापारायण यज्ञ 24 अप्रैल 2016 को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्यातिथि श्री विजेन्द्र कुमार गुप्ता विधायक एवं श्री महेन्द्र कुमार गोयल थे। विशिष्ट अतिथि दि.आ.प्र.स. महामंत्री श्री विनय आर्य, श्री वी.पी. पाण्डेय निगम पार्षद, श्री सुरेन्द्र आर्य, अनिल आर्य, श्री सतीश गोयल, श्री पवन मान, श्री टी.आर. मित्तल (चेयरमैन अग्रवाल फाउंडेशन दिल्ली) ने शिरकत की। **-मंत्री**

आर्य वीर दल दिल्ली प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर दिनांक 27 मई से 5 जून 2016

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश का प्रांतीय प्रशिक्षण शिविर डीएवी पब्लिक स्कूल, सैक्टर 7, रोहिणी, दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है। **उद्घाटन 29 मई को सायं 5 बजे एवं समापन 5 जून को सायं 4:30 बजे** आयोजित किया जाएगा। शिविर में 14 वर्ष से अधिक आयु के आर्य वीर ही भाग ले सकेंगे। जानकारी के लिए संपर्क करें :- **जगबीर आर्य,** संचालक (मो. 9810264634) **बृहस्पति आर्य,** महामंत्री (मो.9990232164)
नोट: 27 मई को वे ही आर्य वीर पहुंचे जिन्हें अपने क्षेत्र में शाखा आरंभ करनी है।

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर दिनांक 22 से 29 मई 2016

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर हंसराज मॉडल स्कूल पंजाबी बाग, नई दिल्ली में 22 से 29 मई, 2016 तक लगाया जाएगा। आप समस्त आर्यसमाजों से निवेदन है कि अपने यहां आने वाली वीरांगनाओं को तथा अपने परिवार की बच्चियों को भाग लेने के लिए अवश्य भेजें।
सम्पर्क करें-**ब्र. सुमेधा आर्या** **श्रीमती शारदा आर्या,** संचालिका मो. 9971447372

संस्कृत संभाषण शिविर : 05 से 14 जून 2016

स्थान : राजधानी पब्लिक स्कूल विकास नगर हस्तसाल उत्तम नगर नई दिल्ली 59
संस्कृत शिक्षक संघ दिल्ली द्वारा दिल्ली संस्कृत अकादमी के सहयोग से निःशुल्क संस्कृत संभाषण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर का समय प्रातः 8:30 से 10:00 बजे रहेगा। इच्छुक संस्कृत सीखने के लिए भाग ले सकते हैं।
सम्पर्क:-9968812963, 9868879710, डॉ. ब्रजेश गौतम, डॉ. विश्वम्भर दयालु।

आर्य पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

प्रीत विहार स्थित आर्य समाज मन्दिर सी ब्लॉक में वेदों के प्रचार-प्रसार को बढ़ाने देने हेतु समाज प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी द्वारा आर्य पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 1 से 10 मई 2016 तक किया गया। सुचारु रूप से निरंतर चले पुरोहित शिविर में संस्कार विधि और सत्यार्थ प्रकाश का प्रशिक्षण माननीय आचार्य प्रभा मित्र जी इन्दौर, आचार्य विष्णुमित्र जी ने कुशल ढंग से दिया। आर्य जगत के प्रसिद्ध शिक्षाविद् श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी ने व्यक्तित्व विकास एवं 'मनुर्भव' की कक्षा आधुनिक शिक्षण शैली में लेकर हंसते-हंसाते हुए आर्य समाज के सिद्धान्तों व मान्यताओं का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया। शिविर समापन से एक दिन पूर्व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी सपत्नीक एवं महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने पधारकर स्वाध्याय पर बल देने को कहा स्वामी दयानन्द सरस्वती जी, गुरुदत्त विद्यार्थी स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनी व स्वामी दयानन्द सरस्वती के पांच ग्रन्थों का सेट सभी प्रशिक्षु पुरोहितों को प्रदान किया और प्रार्थना की कि सभी प्रशिक्षु पुरोहित अधिक से अधिक स्वाध्याय करके उच्च कोटि के आर्य पुरोहित तथा उपदेशक बनें।

-सुरेन्द्र रैली, प्रधान

प्रेरक प्रसंग

वे हँसी में भी कभी झूठ नहीं बोलते थे

पण्डित श्री चमूपतिजी की धर्मपत्नी ने अपनी एक सखी व घरवालों से कह दिया कि अमुक दिन पण्डित चमूपतिजी मुझे लेने आएँगे, मेरा शरीर छूट जाएगा। वे ठीक-ठाक थीं। कोई रोग नहीं था, परन्तु मृत्यु के स्वागत के लिए वे तैयार होकर बैठ गई।

वह दिन आ गया। दस बजे, ग्यारह बजे और बारह बज गये। सबने कहा कि क्यों मौत की सोचती हो? आपको कुछ नहीं होता आप ठीक-ठाक हैं। आप नहीं मरेंगी, परन्तु पण्डित चमूपतिजी की पत्नी की एक ही रट थी कि मुझे स्वप्न में पण्डितजी ने कहा है कि तैयार रहना, मैं अमुक दिन तुम्हें लेने आऊँगा। पण्डितजी तो कभी भी हँसी-विनोद में भी झूठ नहीं बोलते थे, अतः उनकी बात टल नहीं सकती।

और ऐसा ही हुआ। सायंकाल तक पण्डितजी की धर्मपत्नी की मृत्यु हो गई।

मैंने स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से इस घटना के सैद्धान्तिक विवेचन के लिए कहा तो आपने कहा कि पण्डितजी लेने आएँगे या वे लेने आये इसका कोई दार्शनिक आधार नहीं है। सर्वव्यापक व सर्वशक्तिमान् परमेश्वर किसी की सहायता नहीं लेता। स्वप्न को इस रूप में लेना ठीक नहीं है। इस घटना का कारण मनोवैज्ञानिक है। पण्डितजी की पत्नी के मन में यह पक्का विश्वास था कि उनके पति सदा सत्य ही बोलते हैं। इसी विश्वास के कारण वह मर गई। हम प्रायः देखते हैं कि कई बार डाक्टरों, वैद्यों के मुख से अपनी मौत की सम्भावना की बात कान में पड़ते ही रोगी मर जाते हैं।

यह तो हुआ इस घटना का सिद्धान्तपक्ष, परन्तु इस घटना का दूसरा पक्ष यह है कि उस महापुरुष का जीवन कितना निर्मल था कि उनकी पत्नी डंके की चोट से कहती हैं कि वे तो कभी हँसी में भी झूठ नहीं बोलते थे। उनकी सत्यवादिता की ऐसी गहरी छाप!

साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

साप्ताहिक आर्य सन्देश

16 मई 2016 से 22 मई, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 19 मई 2016/ 20 मई, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 18 मई, 2016

स्वास्थ्य चर्चा

गर्मी में होने वाले विभिन्न रोगों से छुटकारा पाने के लिए प्रस्तुत हैं कुछ घरेलू उपाय

मोटापा लाने के लिए : 1. पुरुष यदि दूध में रोटी भिगोकर खाएं तो मोटापा आए।

2. प्रात: दो केले दूध के साथ खाने से पुरुषों को मोटापा आए।

3. असगंध, सफेद मूसली, काली मूसली 50-50 ग्राम कूट छानकर 10 ग्राम दवा प्रात: दूध से लेने से स्त्री-पुरुष दोनों को मोटापा आये।

शरीर शुद्ध हो

1. धतूरे का फल काट छाया में सुखा कूट छान लें। इसके बराबर वजन की खांड मिलाकर 2-2 ग्राम प्रात: सायं पानी से लें।

शरीर में निखार आए:- 1. खाने की हल्दी, सरसों, तिल, कूट, लाल चंदन 20-20 ग्राम कूट छान कर पानी में पीसकर शरीर पर उबटन लगाएं।

2. 50 ग्राम दही में 50 ग्राम मूली का रस मिलाकर शरीर पर मालिश करें।

कद बढ़ना

1. 25 ग्राम घी तेज गर्म कर फिर इसमें 300 ग्राम दूध छोंकें। उतार कर ठंडा करके खांड मिलाकर प्रात: सायं पीयें।

2. त्रिफला 300 ग्राम कूट छान लें। 5 ग्राम प्रात:-सायं शहद से लें।

साभार : चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद

वैद्य खेम भाई द्वारा रचित 'चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद' पुस्तक वैदिक प्रकाशन में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति के लिए अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली-110001 के पते पर भेज सकते हैं।

प्रतिष्ठा में,

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन ए ब्लॉक जनकपुरी, नई दिल्ली में दिनांक 3 जुलाई 2016 को होना निश्चित हुआ है। आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से संबंध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्र-अतिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें।

पंजीकरण शुल्क मात्र 300 रुपये,

पंजीकरण फॉर्म सभा की वैबसाईट **www.thearyasamaj.org**

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुन देव चड्ढा
राष्ट्रीय संयोजक, मो. 9414187428

एस.पी. सिंह
दिल्ली संयोजक, मो. 9540040324

वधू चाहिए

30 वर्षीय आर्य युवक लम्बाई 5'10'' डबल एम.ए., पी.एच-डी. मुम्बई में योग अध्यापक वार्षिक आय 8 लाख, 26 वर्षीय आर्य युवक लम्बाई 5'8'', डबल एम.ए.,एम. एड., मुम्बई में योग अध्यापक वार्षिक आय 8 लाख। दोनों युवकों हेतु लिए आर्य विचारधारा वाली पारिवारिक कन्याएं चाहिए। सम्पर्क करें - **श्री राम मूर्ति आर्य**, रेलवे क्रासिंग मालीपुर, अम्बेडकर नगर(उ.प्र.)

मो. 09415535059, 07666666991

प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, हरिद्वार में कक्षा 6 से 8 तक की कक्षाओं के लिए 15 अप्रैल से प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं।अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

प्रधानाचार्य, गुरुकुल महाविद्यालय सभा ज्वालापुर, हरिद्वार-249404 (उत्तराखण्ड)

शोक समाचार

श्री वीरेन्द्र गुलाटी को मातृ शोक

आर्य केन्द्रिय सभा दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपाल जी, चेयरमैन एमडीएच के ज्येष्ठ भ्राता स्व. धर्मवीर गुलाटी जी की धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पावंती जी का 94 वर्ष की आयु में 16 मई 2016 को प्रात: 11 बजे निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। जिसमें उनके परिवार एवं क्षेत्रिय आर्य समाजों एवं सभा अधिकारियों ने पहुंचकर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा गुरुवार 19 मई 2016 को सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

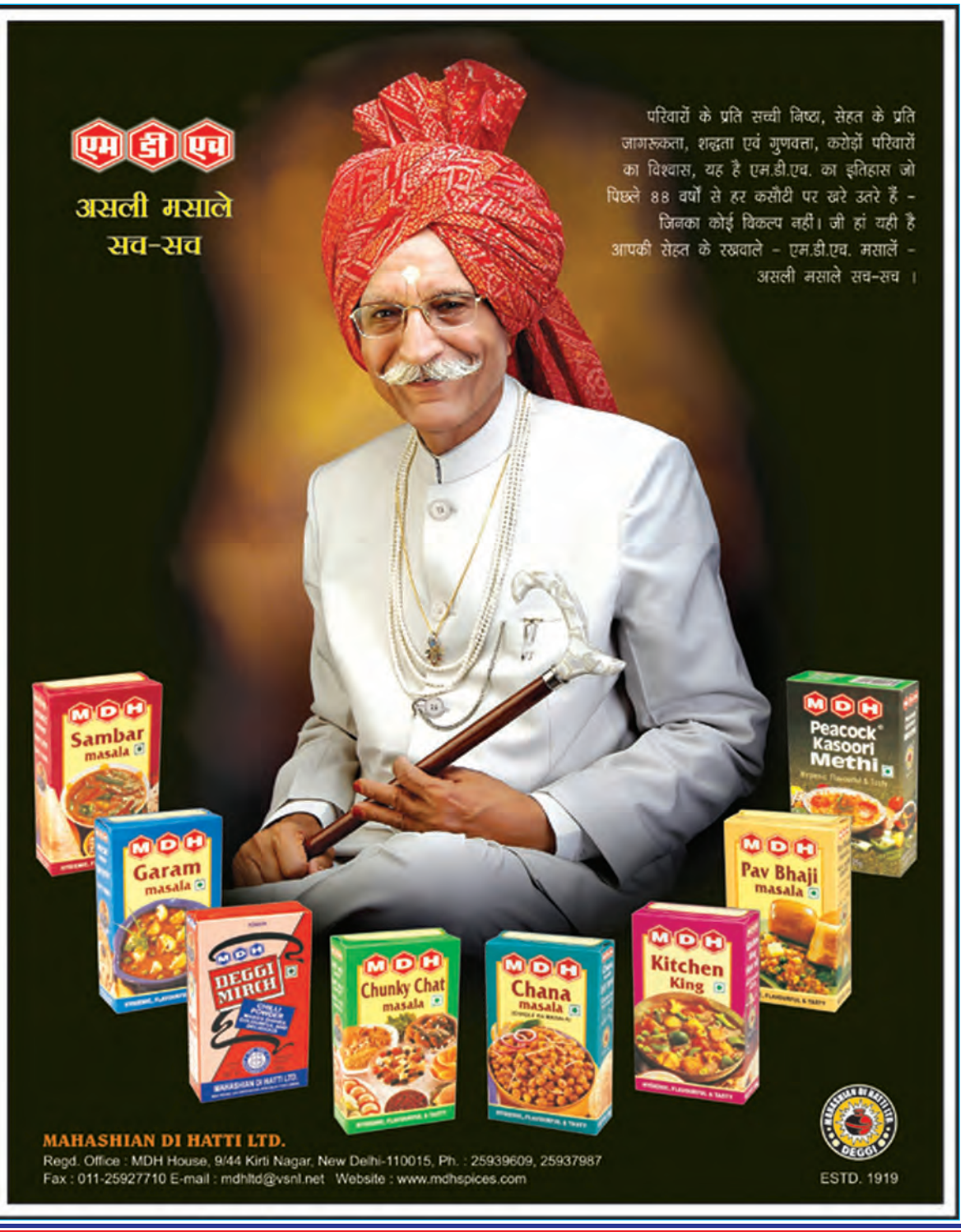

साप्ताहिक आर्य सन्देश में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धांतिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह